<u>**बी.कॉम. तृतीय वर्ष**</u>

आयकर

ईकाई – 1

1. **आयकर : सामान्य परिचय**

   (Income Tax : General Introduction)

2. **मूल अवधारणाएँ : महत्वपूर्ण परिभाषाएँ**

   (Basic Concepts : Important Definitions)

3. **कृषि आय**

   (Agricultural Income)

4. **करमुक्त आयें**

   (Exempted Income)

5. **निवास स्थान तथा कर दायित्व**

   (Residence and Tax Liability)

6. **वेतन से आय**

   (Income from salaries)

ईकाई – 2

7. **वेतन (अवकाश ग्रहण) से आय**

   (Income from salaries) (Retirement)

8. **मकान संपत्ति से आय**

   (Income from House Property)

9. **व्यापार अथवा पेशे से लाभ या प्राप्तियाँ**

   (Profit and Gains of Business or Profession)

10. **कुछ व्यवसायों की अनुमान आधारित आय की गणना**

    (Computation of Income on Estimated Basis of Particular Business)

11. **पूँजी लाभ**

    (Capital Gains)

12. **अन्य साधनों से आय**

    (Income from Other Sources)

13. **हानियों की पूर्ति एवं उन्हें आगे ले जाना**

(Set off and Carry forward of Losses)

14. आय का मिलान एवं मानी गयी आयें

(Clubbing of Income and Deemed Incomes)

ईकाई – 3

15. सकल कुल आय में से कटौतियॉ

(Deductions from Gross Total Income)

16. व्यष्टि की कुल आय की गणना

(Computation of Total Income of Individual)

17. व्यष्टि करदाता के कर दायित्व की गणना

(Calculation of Taxable Liability of Individual)

18. हिन्दु अविभाजित परिवार की करयोग्य आय एवं कर की गणना

(Computation of Taxable Income & Tax Liability of HUF)

19. फर्म का कर निर्धारण

(Assessment of Firm)

20. उद्गम स्थान पर कर की कटौती

(Deduction of Tax at Source)

21. कर का अग्रिम भुगतान

(Advance for Assessment)

ईकाई – 4

22. कर निर्धारण की कार्यविधि

(Procedure for Assessment)

23. स्थायी खाता संख्या (PAN)

(Permanent Account Number)

24. व्यक्तियों के लिये कर नियोजन

(Tax Planning for Indiviudals)

25. कर प्रशासन : आयकर पदाधिकारी

(Tax Administration : Income Tax Authorities)

26. अपील एवं पुनर्विचार

(Appeals and Revision)

27. अर्थदण्ड एवं सजाएँ

(Penalties and Prosecution)

बी. काम तृतीय वर्ष

प्रबन्धकीय लेखांकन

(द्वितीय प्रश्नपत्र)

खण्ड - I

अध्याय 1 : प्रबंधन लेखांकन - एक परिचय

प्रबन्ध लेखांकन का अर्थ और परिभाषा, प्रबन्ध लेखांकन की प्रकृति या विशेषतायें, प्रबन्ध लेखां कन का क्षेत्र, वित्तीय लेखांकन और प्रबन्ध लेखांकन में अन्तर, प्रबन्ध लेखांकन का महत्व, प्र बन्ध लेखांकन के उद्देश्य, प्रबन्ध लेखांकन के यंत्र व तकनीकें अथवा पद्धतियाँ, प्रबन्ध लेखांक न के कार्य, प्रबन्ध लेखांकन की परिसीमायें

अध्याय 2 : वित्तीय विवरण

प्रस्तावना/परिचय, वित्तीय विवरणों का अर्थ, वित्तीय विवरणों के उद्देश्य, वित्तीय विवरणों का वण र्नि, स्थिति विवरण अथवा चिट्ठा, आय विवरण अथवा चिट्ठा, वित्तीय विवरणों की प्रकृति, वित्ती य विवरणों में हित रखने वाले पक्ष एवं उपयोगिता, वित्तीय विवरणों के आवश्यक गुण, वित्तीय ि ववरणों की सीमाएँ

अध्याय 3 : वित्तीय विवरणों का विश्लेषण

विश्लेषण का अर्थ, व्याख्या का अर्थ, वित्तीय विश्लेषण का उद्देश्य, वित्तीय विश्लेषण की प्रक्रि या, वित्तीय विश्लेषण के प्रकार, विश्लेषण की कार्यप्रणाली के अनुसार, विश्लेषण में प्रयुक्त साम ग्री के अनुसार, वित्तीय विश्लेषण का महत्व, वित्तीय विश्लेषण की सीमाएँ, वित्तीय विश्लेषण की तकनीकें, तुलनात्मक वित्तीय विवरण, तुलनात्मक चिट्ठा, तुलनात्मक लाभ-हानि खाता, समानाक ार वित्तीय विवरण, समानाकार चिट्ठा अथवा स्थिति विवरण, समानाकार लाभ-हानि खाता, प्रवृत्ति विश्लेषण

अध्याय 4 : अनुपात विश्लेषण

अनुपात का अर्थ, अनुपात विश्लेषण की प्रकृति, अनुपात विश्लेषण के उद्देश्य या उपयोगिता या भूमिका, अनुपात विश्लेषण की सीमाएं, अनुपातों के उपयोग में सावधानियां, अनुपातों का निर्वचन , अनुपातों का वर्गीकरण, अनुपातों की सहायता से अज्ञात राशियों की गणना, विभिन्न गणना सूत्रों का प्रभावी उपयोग, अनुपातों की सहायता से अन्तिम खातों का निर्माण

खण्ड - II

अध्याय 5 : कोष-प्रवाह विवरण

वैधानिक स्थिति, कोष का आशय, कोष प्रवाह का आशय, कोष प्रवाह विवरण का अर्थ, कोष प्रवाह विवरण की विशेषताएँ, चिट्ठे की मदों का स्पष्ट निरूपण, कोष प्रवाह विवरण के प्रयोग या उद्देश्य, कोष प्रवाह विवरण की सीमाएँ, कोष प्रवाह विवरण एवं चिट्ठे में अन्तर, कोष प्रवाह विवरण एवं आय विवरण में अन्तर, कोष के साधन एवं प्रयोग, कोषों के साधन, कोषों का प्रयोग, कार्यशील पूँजी में परिवर्तन का विवरण या अनुसूची, कोष प्रवाह विवरण का प्रारूप, परिचालन से कोष की गणना, अतिरिक्त सूचनाएं दी हुई होने पर उन मदों से कोष के स्रोत व प्रयोग की राशि की गणना, प्रश्न को हल करने के चरण, स्थायी सम्पतियों का क्रय-विक्रय, दीघ्रकालीन विनियोगों का क्रय-विक्रय, अंश पूँजी व दीर्घकालीन दायित्वों में वृद्धि या कमी, करों के लिए आयोजन, प्रस्तावित लाभांश एवं अन्तरिम लाभांश, लाभ हानि खाते के शेष की अनुपस्थिति, विशिष्ट मदों के व्यवहार, कोष प्रवाह विवरण बताने से सम्बन्धित उदाहरण, प्रक्षेपित कोष प्रवाह विवरण

अध्याय 6 : रोकड़ प्रवाह विवरण

रोकड़ प्रवाह विवरण का अर्थ एवं परिभाषा, रोकड़ प्रवाह विवरण की विशेषताएँ, रोकड़ प्रवाह विवरण के उद्देश्य, रोकड़ प्रवाह विवरण का उपयोग अथवा महत्व, रोकड़ प्रवाह विवरण की सीमाएँ, रोकड़ प्रवाह विवरण एवं कोष प्रवाह विवरण में अन्तर, रोकड़ प्रवाह का वर्गीकरण, रोकड़ प्रवाह विवरण का प्रारूप, रोकड़ प्रवाह विवरण तैयार करना

अध्याय 7 : अवशोषण एवं सीमान्त लागत लेखांकन

अवशोषण लागत विधि का आशय, सीमात्त लागत लेखांकन का अर्थ, परिभाषा, सीमान्त लागत लेखांकन के लक्षण, सीमान्त लागत विधि के लाभ, सीमान्त लागत लेखांकन की सीमाएँ, अवशोषण लागत व सीमान्त लागत में अन्तर, भेदात्मक लागत सीमान्त, निर्णयन, निर्णय के क्षेत्र, निर्णय व लागतें, निर्णय प्रक्रिया, उदाहरण

अध्याय 8 : सम विच्छेद विश्लेषण

सम विच्छेद विश्लेषण का अर्थ एवं परिभाषा, सम विच्छेद विश्लेषण की मान्यताएँ, सम विच्छेद विश्लेषण के लाभ, सम विच्छेद विश्लेषण की सीमाएँ, सम विच्छेद बिन्दु की गणना, लाभ कारकों में परिवर्तनों का प्रभाव, सुरक्षा सीमा का अर्थ, सुरक्षा सीमा का महत्व, लाभ मात्रा अनुपात, लाभ मात्रा अनुपात के प्रयोग, लाभ मात्रा अनुपात में सुधार के उपाय, सम विच्छेद चार्ट, उदाहरण

खण्ड - III

अध्याय 9 : बजट एवं इसके प्रकार

बजट का आशय, बजट की परिभाषा, बजट के उद्देश्य, बजट तथा पूर्वानुमान में अन्तर, बजट तैयार करना, बजट के प्रकार, शून्य आधार बजट, निष्पादन बजट, उदाहरण

अध्याय 10 : बजटरी नियंत्रण

बजटरी नियन्त्रण का आशय, बजटरी नियन्त्रण की परिभाषा, बजटरी नियन्त्रण के उद्देश्य व महत व, बजटरी नियन्त्रण के लाभ, बजटरी नियन्त्रण की कमियाँ, बजटरी नियन्त्रण की प्रणाली

अध्याय 11 : उत्तरदायित्व लेखांकन

उत्तरदायित्व लेखांकन का आशय, उत्तरदायित्व लेखांकन की परिभाषाऐं, विशेषताएँ, सिद्धान्त, उत्त रदायित्व लेखांकन का महत्व, उत्तरदायित्व लेखांकन व परम्परागत लेखांकन में भिन्नता, लाभ केन्द्र, निवेश केन्द्र, उत्तरदायित्व लेखांकन के लाभ, उत्तरदायित्व लेखांकन के दोष, उत्तरदायित्व लेखांकन प्रतिवेदन तैयार करने की रीति

खण्ड - IV

अध्याय 12 : प्रमाप परिव्ययन

प्रमाप परिव्ययन की परिभाषा, प्रमाप परिव्ययन के मूल तत्व, प्रमाप परिव्ययन के लाभ, प्रमापित परिव्यय और ऐतिहासिक परिव्यय प्रणालियाँ, प्रमापित परिव्यय और ऐतिहासिक परिव्यय में अन्तर , ऐतिहासिक परिव्ययों की सीमायें, प्रमाप लागत और अनुमानित लागत प्रणालियाँ, प्रमाप परिव्ययन और बजटरी नियंत्रण में सम्बन्ध, प्रमाप परिव्ययन पद्धति की स्थापना, विचरण विश्लेषण का आशय, विचरणों के कारण, विचरणों के समाधान

अध्याय 13 : विचरण विश्लेषण : सामग्री, श्रम एवं उपरिव्यय विचरण

विचरण का अर्थ, नियंत्रणीय एवं अनियन्त्रणीय विचरण, विचरण विश्लेषण के प्रबन्धकीय उपयोग , विचरणों का वर्गीकरण, उदाहरण

वित्तीय प्रबन्ध

(तृतीय प्रश्नपत्र)

खण्ड - I

अध्याय 1 : वित्तीय प्रबंध : एक परिचय

इतिहास एवं विकास, अर्थ एवं परिभाषा, महत्व, प्रकृति, सीमाएँ, अवधारणाएँ, वित्तीय प्रबन्ध के कार्य

अध्याय 2 : पूँजी बजटन – I

पूँजी बजटन का अर्थ एवं परिभाषायें, पूँजी बजटन के उद्देश्य, पूँजी बजटन की मुख्य विशेषतायें, पूँजी व्यय या पूँजी परियोजनाओं के प्रकार, पूँजी बजटन की प्रक्रिया, पूँजी बजटन के महत्त्वपूर्ण घटक, पूँजी बजटन का महत्व, पूँजी बजटन की सीमाएँ

अध्याय 3 : पूँजी बजटन – II

पूँजी बजटन प्रविधियाँ, परम्परागत विधियाँ, अपरिहार्यत विधि, अदायगी अवधि विधि, औसत प्रत्याय दर विधि, अपहरित रोकड़ प्रवाह विधियाँ, शुद्ध वर्तमान मूल्य विधि, वर्तमान मूल्य सूचकांक या लाभदायकता सूचकांक विधि, आंतरिक प्रत्याय दर विधि, अन्य विधियाँ

खण्ड - II

अध्याय 4 : पूँजी की लागत

पूँजी की लागत का अर्थ एवं परिभाषाएँ, पूँजी की लागत की विशेषताएँ, पूँजी की लागत की अवधारणा का महत्व, पूँजी की लागत का वर्गीकरण, पूँजी की लागत की गणना

अध्याय 5 : परिचालन एवं वित्तीय उत्तोलक

अर्थ, परिभाषा, उत्तोलक के प्रकार, परिचालन उत्तोलक, वित्तीय उत्तोलक, संयुक्त उत्तोलक, उदाहरण

खण्ड - III

अध्याय 6 : पूँजी संरचनाः सिद्धान्त एवं निर्धारण करने वाले तत्व

शुद्ध आय सिद्धान्त, शुद्ध परिचालन आय सिद्धान्त, परम्परागत सिद्धान्त, मोदीग्लियानी-मिलर सिद्धान्त, पूँजी संरचना का अर्थ एवं परिभाषाएँ, पूँजी संरचना, वित्तीय संरचना तथा सम्पत्ति संरचना, पूँजी संरचना को प्रभावित करने वाले तत्व, संतुलित या अनुकूलतम पूँजी संरचना, क्या अनुकूलतम पूँजी संरचना एक मिथक/कल्पना है?, पूँजी संरचना का नियोजन या निर्णयन, समता पर व्यापार, पूँजी दन्तिकरण, पूँजी की लागत

अध्याय 7 : लाभांश नीतियाँ

लाभांश का अर्थ एवं परिभाषाएं, लाभांश घोषणा एवं वितरण के सम्बन्ध में भारतीय कम्पनी अधिनियम के प्रावधान, प्रावधान, लाभांश के प्रकार, बोनस अंश या स्कन्ध लाभांश, लाभांश नीति का अर्थ, एक सुदृढ़ लाभांश नीति के आवश्यक तत्व, लाभांश नीति का निर्धारण एवं प्रकार, सुस्थिर लाभांश नीति के लाभ, सुस्थिर लाभांश-नीति का निर्माण, लाभांश नीति को प्रभावित करने वाले तत्व, लाभांश की प्रासंगिकता एवं लाभांश प्रमेय, समीक्षा, गॉर्डन फार्मूला अथवा प्रमेय

खण्ड - IV

अध्याय 8 : कार्यशील पूँजी का प्रबन्ध

कार्यशील पूँजी के प्रकार, कार्यशील पूँजी का महत्व, आवश्यकता से अधिक कार्यशील पूँजी के दोष, कार्यशील पूँजी के स्त्रोत, कार्यशील पूँजी के मात्रा के निर्धारक घटक, कार्यशील पूँजी का अनुमान लगाने की विधियाँ, बैंकों द्वारा कार्यशील पत्रूँजी के निर्धारण में शिथिलता

अध्याय 9 : रोकड़ का प्रबन्ध

नकद/रोकड़ कोषों की आवश्यकता, रोकड़ स्तर को निर्धारित करने वाले तत्व, रोकड़ प्रबन्ध के उद्देश्य, रोकड़ प्रबन्ध के लाभ, रोकड़ प्रबन्ध के दोष, रोकड़ प्रबन्ध के कार्य

अध्याय 10 : प्राप्यों का प्रबन्ध

अर्थ एवं परिभाषा, आवश्यकता, क्षेत्र, उदाहरण

अध्याय 11 : स्कन्ध प्रबन्ध

स्कन्ध नियंत्रण का अर्थ एवं परिभाषा, स्कन्ध नियंत्रण प्रणाली की सारभूत आवश्यकताएँ, स्कन्ध प्रबन्ध के उद्देश्य, स्कन्ध नियंत्रण के लाभ, स्कन्ध को प्रभावित करने वाले तत्व, स्कन्ध निर्धारण के विभिन्न स्तर, स्कन्ध नियंत्रण की 'ए.बी.सी.' प्रणाली, पुनः आदेश मात्रा अथवा आर्थिक आदेश मात्रा, सामग्री अथवा स्कन्ध आवर्त, स्कन्ध नियंत्रण की न्यूनतम व अधिकतम प्रणाली, स्कन्ध नियंत्रण की आदेश चक्र प्रणाली, स्कन्ध नियंत्रण की बजटरी नियंत्रण प्रणाली, स्कन्ध नियंत्रण की दविबिन प्रणाली, स्कन्ध नियंत्रण की भौतिक गणन पद्धतियाँ (1) निरन्तर गणना प्रणाली (2) सामयिक गणना प्रणाली

लेखा परिक्षण (अंकेक्षण)

(चतुर्थ प्रश्नपत्र)

खण्ड - I

अध्याय 1 : अंकेक्षणः आशय एवं उद्देश्य

अंकेक्षण का इतिहास व भारत में लेखा व्यवसाय का विकास, मानक अंकेक्षण व्यवहार, पुस्तपालन व लेख ांकन, अंकेक्षण का अर्थ व परिभाषा, अंकेक्षण की विशेषताएँ, लेखांकन व अंकेक्षण में अन्तर, लेखांकन एक अनिवार्यत हैं जबकि अंकेक्षण एक विलासिता हैं, अंकेक्षण के उद्देश्य, अशुद्धि व कपट, अंकेक्षण को नियंत्रित करने वाले सिद्धान्त, अंकेक्षण का कार्यक्षेत्र, अंकेक्षण के प्रकार, अंकेक्षण के लाभ, अंकेक्षण की सीमाएं, अंकेक्षण सिद्धान्त, प्रक्रिया व प्रविधि

अध्याय 2 : अंकेक्षण के प्रकार

अंकेक्षण के अधीन उधमों की संगठन के प्रारूप पर आधारित अंकेक्षण के प्रकार, उद्देश्य आधारित प्रकार, अन्य प्रकार के अंकेक्षण, वार्षिक अंकेक्षण या अन्तिम अंकेक्षण, चालू अंकेक्षण, आन्तरिक अंकेक्षण तथा स्वतंत्र अंकेक्षण में अन्तर, सरकारी अंकेक्षण व व्यावसायिक अंकेक्षण, अन्तिम अंकेक्षण व चालू अंकेक्ष ण

अध्याय 3 : अंकेक्षण प्रक्रिया

अंकेक्षण कार्यक्रम के उद्देश्य, अंकेक्षण कार्यक्रम की रचना, अंकेक्षण कार्यक्रम के लाभ एवं हानियाँ, लो चपूर्ण अंकेक्षण कार्यक्रम, अंकेक्षण कार्य का प्रारम्भ, अंकेक्षण सिद्धान्त प्रक्रिया एवं प्रविधियाँ, नैत्यक ज ाँच, परीक्षण जाँच, अंकेक्षण कार्य से सम्बन्धित पत्र, अंकेक्षण में प्रयुक्त चिन्ह

अध्याय 4 : आन्तरिक जाँच तथा आन्तरिक नियंत्रण

आन्तरिक निरीक्षण-अर्थ एवं उद्देश्य, आदर्श आन्तरिक निरीक्षण प्रणाली की विशेषताएँ, आन्तरिक निरीक्ष ाण व्यवस्था के लाभ-हानि, आन्तरिक निरीक्षण की कार्य प्रणाली, आन्तरिक अंकेक्षण का अर्थ एवं परिभ ाषा, आन्तरिक अंकेक्षण के उद्देश्य, कुशल आन्तरिक अंकेक्षण की विशेषताएँ, आन्तरिक निरीक्षण एवं आन्तरिक अंकेक्षण में अन्तर, वैधानिक अंकेक्षण एवं आन्तरिक अंकेक्षण के माध्य सम्बन्ध, वैधानिक अं केक्षण की आन्तरिक अंकेक्षण पर निर्भरता

अध्याय 5 : प्रमाणन

प्रमाणन:अर्थ एवं परिभाषा, प्रमाणन के उद्देश्य, प्रमाणन का महत्व, प्रमाणन एवं प्रमाणकों के भेद, प्रमाण न एवं अंकेक्षण, प्रारम्भिक लेखे की पुस्तकों का प्रमाणन, खतौनी की जाँच, खाताबहियों की जाँच, तलप ट की जाँच

अध्याय 6 : सम्पत्तियों एवं दायित्वों का सत्यापन

सम्पत्तियों का सत्यापनः अर्थ एवं परिभाषा, दायित्वों का सत्यापनः अर्थ एवं परिभाषा, सत्यापन के उद्देश य, सत्यापन के सामान्य सिद्धान्त, सम्पत्तियों का मूल्यांकन, मूल्यांकन के प्रचलित सिद्धान्त, मूल्यांकन के सम्बन्ध में अंकेक्षण की स्थिति, प्रमाणन, मूल्यांकन तथा सत्यापन में अन्तर, व्यावहारिक सत्यापन

खण्ड - II

अध्याय 7 : कम्पनी अंकेक्षक: नियुक्ति, शक्तियाँ, कर्त्तव्य एवं दायित्व

कम्पनी अंकेक्षक की योग्यताएँ, कम्पनी अंकेक्षक की अयोग्यताएँ, कम्पनी अंकेक्षक की नियुक्ति, वैधानिक अंकेक्षक की अधिकतम सीमा, अंकेक्षक द्वारा नियुक्ति की सूचना देना, नियुक्ति के सम्बन्ध में अंकेक्षक के कर्तव्य, कम्पनी अंकेक्षक का पारिश्रमिक, वैधानिक अंकेक्षक को पद से हाटाना, कम्पनी अंकेक्षण के दायित्व, अंकेक्षक के अधिकार

अध्याय 8 : विभाजन योग्य लाभ एवं लाभांश

विभाजन योग्य लाभों का अर्थ एवं परिभाषायें, कम्पनी अधिनियम के प्रावधान एवं अंकेक्षण का दायित्व

अध्याय 9 : अंकेक्षक की रिपोर्ट

अर्थ एवं परिभाषा, महत्व / आवश्यकता, क्षेत्र / कार्य प्रणाली, श्रेणियाँ / माप / तकनीकें / विधि, सिद्धांत / अवधारणायें / मान्यतायें, कार्य आधार, उदाहरण

अध्याय 10 : विशेष अंकेक्षण : बैंकिंग कम्पनी, बीमा कम्पनी तथा शैक्षिक संस्थान

बैंकिंग कम्पनी का अंकेक्षण, बीमा कम्पनी का अंकेक्षण, अंकेक्षक की रिपोर्ट का नमूना (राष्ट्रीयकृत बैंकों के लिए), अंकेक्षक की रिपोर्ट का नमूना (अराष्ट्रीयकृत बैंकों के लिए), अंकेक्षक की रिपोर्ट का नमूना, शिक्षण संस्थान का अंकेक्षण

खण्ड - III

अध्याय 11 : अनुसंधान

अर्थ, अंकेक्षण व अनुसंधान में अन्तर, जांच पड़ताल व अनुसंधान, विशेष अंकेक्षण व अनुसंधान, अनुसंधान प्रारम्भ करने से पूर्व ध्यान देने योग्य बातें, अनुसंधान रिपोर्ट बनाते समय ध्ययन दने योगय बातें, अनुसंधान के उद्देश्य

अध्याय 12 : गैर-लाभ कम्पनियों का अंकेक्षण

गैर-लाभ उद्देश्य वाली कम्पनियाँ, क्लबों का अंकेक्षण, अस्पतालों का अंकेक्षण

खण्ड - IV

अध्याय 13 : लागत अंकेक्षण

अर्थ एवं परिभाषा, आवश्यकता, प्रकृति/अंतर, गुण/लाभ-दोष, नियुक्ति/अधिकार/योग्यताऐं, क्षेत्र, कार्यक्रम, उदाहरण

अध्याय 14 : कर अंकेक्षण

आशय, अनिवार्य कर अंकेक्षण

अध्याय 15 : प्रबन्ध अंकेक्षण

आशय एवं परिभाषा, प्रबन्धक अंकेक्षण के उद्देश्य व गुण, प्रबन्ध अंकेक्षण की भूमिका/कार्य, प्रबन्ध अंकेक्षण की तकनीकें, कार्यक्षेत्र, कर्त्तव्य, गुण, नियुक्ति, वित्तीय अंकेक्षण व प्रबन्ध अंकेक्षण, रिपोर्ट

अध्याय 16 : कम्पनी अंकेक्षण

अंश पूँजी, अंश पूँजी अंकेक्षण के उद्देश्य, अंशों का निर्गमन, नकद के बदले जारी अंशों का अंकेक्षण, अंशों का रोकड़ के अतिरिक्त अन्य प्रतिफल के लिए निर्गमन, प्रीमियम पर अंशों का निर्गमन, अंशों का बट्टे पर निर्गमन, अप्राप्त याचना राशि का अंकेक्षण, याचना राशि पर अग्रिम प्राप्ति, स्वेट समता अंशों का अंकेक्षण, प्रतिभूतियों की वापसी खरीद का अंकेक्षण, शोध्य अधिमान अंशों का अंकेक्षण, अंश पूँजी का परिवर्तन, अंश पूँजी में कमी, अंश हरण का अंकेक्षण, अधिकार अंशों का निर्गमन, अंश हस्तान्तरण का अंकेक्षण, अंशों का पारेषण, बोनस अंश निर्गमन का अंकेक्षण, ऋणपत्रों का अंकेक्षण

विपणन के सिद्धान्त

(पंचम् प्रश्नपत्र)

खण्ड - I

अध्याय - 1 विपणन : प्रकृति, क्षेत्र, महत्व तथा विचारधाराएँ

बाजार क्या है?, विपणनकर्त्ता कौन होता है?, विपणन का आशय एवं परिभाषाएँ, लक्षण/प्रकृति, किसका विपणन किया जा सकता है?, विपणन का महत्व, विपणन का कार्यक्षेत्र, विपणन तथा जीवन-स्तर, सामाजिक विपणन, विपणन एवं विक्रय में अन्तर, विपणन प्रबन्ध : आशय एवं परिभाषाएँ, विपणन प्रबन्ध का क्षेत्र, विपणन प्रबन्ध एवं विक्रय प्रबन्ध में अन्तर, विपणन अवधारणा, विपणन अवधारणा का विकास, विपणन की आधुनिक अवधारणा, मान्यताएँ, विपणन की आधुनिक एवं प्राचीन अवधानणा में अन्तर, सामाजिक विपणन अवधारणा तथा विपणन अवधारणा में अन्तर।

अध्याय - 2 विपणन मिश्र एवं विपणन वातावरण

विपणन मिश्रण के तत्व, विपणन वातावरण, आन्तरिक वातावरण, बाह्य वातारवण, विपणन वातावरण के अध्ययन का महत्व, विपणन वातावरण की प्रकृति।

अध्याय - 3 उपभोक्ता व्यवहार : प्रकृति, क्षेत्र व महत्व

उपभोक्ता व्यवहार : आशय एवं परिभाषाएँ, क्रेता-व्यवहार का महत्व, उपभोक्ता व्यवहार का स्वभाव, प्रभावित करने वाले कारक, उपभोक्ता व्यवहार के अध्ययन की रीतियाँ, क्रय-निर्णय प्रक्रिया, उपभोक्ता व्यवहार के प्रतिरूप, संगठनात्मक क्रय व्यवहार, संगठनात्मक क्रय निर्णय प्रक्रिया, क्रय प्रेरणाएँ, क्रय प्रेरणाओं के प्रकार, क्रय प्रेरणाओं को तय करने में बाधाएँ, क्रय प्रेरणाओं की जानकारी का महत्व, संगठनात्मक क्रय व्यवहार तथा व्यक्तिगत क्रय व्यवहार में अन्तर।

अध्याय - 4 बाजार विभक्तिकरण: अवधारणा, महत्व एवं आधार

बाजार विभक्तिकरण: आशय एवं परिभाषाएँ, बाजार विभक्तिकरण के उद्देश्य, बाजार विभक्तिकरण के विकास के कारण, बाजार विभक्तिकरण के आधार, बाजार विभक्तिकरण के लाभ, बाजार विभक्तिकरण सम्बन्धी रणनीतियाँ, बाजार विभक्तिकरण के आवश्यक तत्व, लक्ष्य बाजार रणनीति पर प्रभाव डालने वाले कारक, बाजार विभक्तिकरण की विधियाँ, वस्तु भिन्नता तथा बाजार विभक्तिकरण के अन्तर।

खण्ड - II

अध्याय - 5 उत्पाद : अवधारणा, उपभोक्ता एवं औद्योगिक माल तथा उत्पाद जीवन चक्र

उत्पाद: आशय एवं परिभाषाएँ, उत्पादक वर्गीकरण, उत्पाद जीवन-चक्र, उत्पाद जीवन-चक्र पर प्रभाव डालने वाले कारक, उत्पाद में सुधार तथा उत्पाद जीवन-चक्र, उत्पाद जीवन-चक्र पर प्रभाव डालने वाले कारक, गुण/ महत्व, औद्योगिक उत्पाद तथा उपभोक्ता उत्पाद में भिन्नता, उत्पाद रणनीतियाँ, उत्पाद के गुण , उत्पाद निर्णय, उत्पाद मिश्रण पर प्रभाव डालने वाले कारक, नये उत्पादों का वर्गीकरण।

अध्याय - 6 उत्पाद नियोजन एवं विकास

उत्पाद नियोजन क्या है?, वस्तु नियोजन की उपयोगिता, उत्पाद अप्रचलन, उत्पाद विकास: आशय एवं परिभाषाएं, उत्पाद विकास का महत्व, उत्पाद विकास के सिद्धान्त, उत्पाद विकास की प्रक्रिया, उत्पाद परित्याग, उत्पाद संशोधन, उत्पाद नवकरण, उत्पाद नवकरण के लिए उत्तरदायी कारण, सफल उत्पाद नवकरण हेतु आवश्यक दशाएँ, वस्तु नियोजन हेतु संगठन, उत्पाद विकास के स्त्रोत, उत्पाद अनुकूलन, उपभोक्ता वर्ग का वर्गीकरण, उपभोक्ता अनुकूलन: प्रक्रिया।

अध्याय - 7 पैकेजिंग, ब्राण्ड नाम व व्यापार चिन्ह तथा विक्रयोपरान्त सेवा

पैकेजिंग के उद्देश्य, पैकेजिंग के उद्देश्य, पैकेजिंग के कार्य, पैकेजिंग की उपयोगिता, पैकेजिंग के विभिन्न स्तर, पैकेजिंग निर्णय, पैकेजिंग में परिवर्तन करना, अच्छे पैकेज की मुख्य बातें, पैकेजिंग के प्रकार, ब्राण्ड एवं व्यापार चिन्ह, अच्छे ब्राण्ड नाम की विशेषताएँ, ब्राण्ड के गुण, ब्राण्ड तथा ट्रेडमार्क, ब्राण्ड तय करना , ब्राण्ड परीक्षण, लेबल लगाना, विक्रयोपरान्त सेवा, विक्रय अवरोध।

अध्याय - 8 मूल्य : विपणन मिश्रण में मूल्य का महत्व, प्रभावित करने वाले कारक बट्टा व छूट

मूल्य क्या होता है?, मूल्य निर्धारण का महत्व, प्रभावित करने वाले कारक, मूल्य व्यूह रचना/नीतियाँ, मूल यन प्रक्रिया, मूल्यन के ढंग, मूल्यन हेतु वांछित सूचनाएँ, पुन: विक्रय मूल्यन, बट्टा व छूट।

खण्ड - III

अध्याय - 9 वितरण माध्यम : अवधारणा, भूमिका, प्रकार एवं प्रभावित करने वाले कारक

आशय एवं परिभाषाएँ, वितरण वाहिका के गुण, वितरण वाहिकाओं की भूमिका का कार्य, फर्म द्वारा मध्य स्थों को काम में लाने के कारण, वितरण वाहिकाएं : प्रकार, वितरण वाहिका का चयन, वाहिका निर्णयन व अभिकल्पन, विपणि विस्तार, विपणन मध्यस्थ, वितरण नीतियाँ, एकमात्र एजेन्सी या डीलरशिप।

अध्याय - 10 थोक तथा फुटकर विक्रेता

थोक व्यापारी, कार्य, वर्गीकरण, क्या थोक व्यापारियों को हटा देना चाहिए?, फुटकर विक्रेता, फुटकर वि क्रेता के कार्य, उत्पादकों द्वारा फुटकर बिक्री, भविष्य, फुटकर विक्रेताओं के प्रकार, फुटकर व्यापार की स फलता हेतु आवश्यक बातें, बहुविकल्प शाला, विभागीय भण्डार।

अध्याय - 11 भौतिक वितरण, परिवहन, भण्डारण, स्कन्ध नियन्त्रण एवं आदेश प्रसंस्करण

भौतिक वितरण: आशय एवं परिभाषाएँ, भौतिक वितरण के महत्व में वृद्धि के कारण, भौतिक वितरण के संघटक।

अध्याय - 12 संवर्द्धन : विधियाँ एवं अनुकूलतम उत्पाद मिश्रण

संवर्द्धन अथवा प्रवर्तन का आशय एवं परिभाषाएँ, संप्रेषण निर्णय, सम्प्रेषण अथवा संवर्द्धन के उद्देश्य, संव र्द्धन निर्णय, संवर्द्धन मिश्रण निर्णय लेना, संवर्द्धन की भूमिका, प्रभाव डालने की भूमिका, अनुकूलतम संव र्द्धन मिश्रण, संवर्द्धन के उपकरणों में अन्तर।

खण्ड - IV

अध्याय - 13 विज्ञापन माध्यम : गुण एवं सीमाएँ एवं प्रभावी विज्ञापन की विशेषताएँ

विज्ञापन का आशय एवं परिभाषाएँ, विशेषताएँ, विज्ञापन के लाभ, विज्ञापन के प्रति आरोप, विज्ञापन के उद्देश्य, विज्ञापन माध्यम, मीडिया माध्यम एवं व्यय, विज्ञापन माध्यम के चुनाव को प्रभावित करने वाले तत्व, विज्ञापन प्रभावोत्पादकता मापन के ढंग।

अध्याय - 14 वैयक्तिक विक्रय

वैयक्तिक विक्रय: आशय एवं परिभाषाएँ, वैयक्तिक विक्रय की विशेषताएँ, उद्देश्य, वैयक्तिक विक्रय के विभिन्न लाभ, वैयक्तिक विक्रयकर्ताओं के प्रकार, वैयक्तिक विक्रय के कार्य, वैयक्तिक विक्रय के दोष, बाजार में वैयक्तिक विक्रय की प्रक्रिया, वैयक्तिक विक्रय के ढंग, वैयक्तिक विक्रेता के गुण, सफल विक्रयकर्ता पैदा होते हैं, बनाए नहीं जाते, प्रचार, विज्ञापन तथा वैयक्तिक विक्रय में अन्तर, विज्ञापन विक्रय संवर्द्धन वैयक्तिक विक्रय में अन्तर।

अध्याय - 15 विक्रयण : एक पेशा, विक्रयकर्ताओं का वर्गीकरण एवं कार्य

विक्रय से पूर्व विषय या प्रक्रिया, विक्रय रुकावटों को दूर करना अथवा विक्रय कठिनाइयों को दूर करने के उपाय, ग्राहक द्वारा जाँच या परीक्षा, विक्रय समाप्ति, विक्रयकर्ता का अर्थ एवं परिभाषा, विक्रयकर्ता का महत्व, एक विक्रयकर्ता के कार्य या कर्तव्य एवं उत्तरदायित्व, विक्रयकर्ताओं के प्रकार, यात्री विक्रेता एवं काउण्टर विक्रयकर्ताओं में अन्तर, विक्रय: एक पेशा।

वित्तीय विपणन प्रचालन

(षष्ठम् प्रश्नपत्र)

खण्ड-I

अध्याय 1 : मुद्रा बाजार

वित्तीय बाजारों का वर्गीकरण, मुद्रा बाजार का आशय, मुद्रा बाजार का कार्य, पूँजी बाजार, पूँजी बाजार के विभिन्न कार्य, मुद्रा बाजार तथा पूँजी बाजार के कार्य, मुद्रा बाजार तथा पूँजी बाजार तथा पूँजी बाजार में सम्बन्ध, वित्तीय बाजार की विभिन्न सस्थाएं, विकसित मुद्रा बाजार के लक्ष्ण, अविकसित मुद्रा बाजार के विभिन्न लक्षण, ट्रेजरी बिल, वित्तीय बाजार के उपकरण, पूँजी बाजार के उपकरण, भारतीय मुद्रा बाजार, भारतीय मुद्रा बाजार के संघटक, भारतीय मुद्रा बाजार के कार्य, मुद्रा बाजार की बनावट, भारतीय मुदा बाजार की कमियाँ, बिल बाजार, बिल बाजार योजना के दोष, सीमाएँ, संगणित बिल-बाजार के अभाव के कारण, बिल बाजार को विकसित करने के सुझाव, भारतीय मुद्रा बाजार को सुदृढ बनाने के लिए सरकारी कदम

अध्याय 2 : पूँजी बाजार

पूँजी बाजार आशय एवं परिभाषाएँ, भारतीय पूँजी बाजार, पूँजी बाजार का ढाँचा, सरकारी प्रतिभूति बाजार, कार्पोरेट प्रतिभूति बाजार, मुद्रा बाजार तथा पूँजी बाजार, पूँजी बाजार के मुख्य अंग, पूँजी बाजार के कार्य, पूँजी बाजार के प्रपत्र, भारतीय पूँजी बाजार की समस्याएँ।

अध्याय 3 : नव निर्गमन बाजार अथवा प्राथमिक बाजार

नव निर्गमन बाजार या प्राथमिक बाजार क्या है?, नवीन प्रतिभूतियों का विपणन या बिक्री, प्रतिभूतियों के विपणन की विधियाँ, आबंटन प्रक्रिया, समस्याएँ, बाजार में सुधार

अध्याय 4 : द्वितीयक बाजार

द्वितीयक बाजार का आशय, प्राथमिक मार्केट तथा द्वितीय मार्केट में अर्न्तसम्बन्ध, द्वितीयक बाजार तथा प्राथमिक बाजार में अन्तर, द्वितीयक बाजार की मुसीबतें, द्वितीयक बाजार की नवीन प्रवृत्तियाँ

अध्याय 5 : सार्वजनिक निर्गमन

प्रतिभूतियों को निर्गमित करने सम्बन्धी अर्हता नियम, मूल्य-निर्धारण करना, अभिगोपन करना, न्यूनतम प्रस्ताव, न्यूनतम अभिदान, बुक बिल्डिंग, अधिकार निर्गम, बोनस अंश, पूर्वाधिकार निर्गम, कर्मचारी स्कन्ध विकल्प, असूचीयन की प्रक्रिया

अध्याय 6 : स्कन्ध विपणि

अध्ययन के उद्देश्य।, परिचय।, स्कन्ध विपणि: आशय एवं परिभाषाएँ, कार्य, व्यवहार करने की प्रक्रिया, मूल्यों को प्रभावित करने वाले घटक, भारत में स्कन्ध विपणि, सेबी की भूमिका, संगठन

एवं विकास, स्कन्ध विपणियों, स्कन्ध विपणियों की कमियाँ, स्टॉक एक्सचेंज के विभाग, सदस्यता की योग्यताएँ, सारांश।

अध्याय 7 : नेशनल स्टॉक एक्सचेन्ज लि. तथा ओवर द काउन्टर एक्सचेन्ज ऑफ इण्डिया लि.

उद्देश्य, परिचय, नेशनल स्टॉक एक्सचेन्ज, ओवर दि काउण्टर एक्सचेन्ज ऑफ इण्डिया

खण्ड-II

अध्याय 8 : प्रतिभूति संविदा विनियमन) अधिनियम, 1956

उद्देश्य, परिचय, मान्य स्कन्ध विपणि, मान्य स्कन्ध विपणियों की शक्ति, दण्ड, प्रतिभूतियों में अनुबन्ध, डीलरों को लाइसेंस देना, शास्तियाँ एवं प्रक्रियाएँ, सूचीकरण

अध्याय 9 : निवेशकों का संरक्षण

शिकायतें, संस्थाओं का नियंत्रण, निवेशकों के अधिकार, वैधानिक रूपरेखा, बोर्ड द्वारा प्रवर्तन, लोकायुक्त, निवेशक शिक्षा

अध्याय 10 : सेबी, न्यायाधिकरण एवं न्यायालय

सेबी के अधिकार, कार्यक्षेत्र एवं सीमाएँ, सामूहिक निवेश योजना, सेबी की सफलताएँ, प्रतिभूति अपीलीय न्यायाधिकरण, उच्चतम न्यायालय में अपील, केन्द्रीय सरकार की शक्तियाँ

खण्ड-III

अध्याय 11 : स्कन्ध विपणियों के कार्य

स्कन्ध दलाल, सौदों की कार्य पद्धति, जॉबर्स, विदेशी ब्रोकर, बाजार नियामक या निर्माता, पोर्टफोलियो सलाहकार, संस्थागत निवेशकर्ता

खण्ड-IV

अध्याय 12 : मर्चेन्ट बैंकिंग

मर्चेन्ट बैंक का अर्थ, भारत में मर्चेन्ट बैंकिंग का विकास, मर्चेन्ट बैंक के कार्य, भारत में मर्चेन्ट बैंकों की कार्य प्रणाली, मर्चेन्ट बैंकिंग की कमियां और उपचार, पारस्परिक निधियाँ –परिचय, पारस्परिक निधयाँ – अर्थ एवं परिभाषा, पारस्परिक निधियों के प्रकार, भारत में पारस्परिक निधियाँ, पारस्परिक निधियों के सम्बन्ध में सरकार द्वारा जारी दिशा निर्देश

अध्याय 13 : क्रेडिट रेटिंग

प्रभावित करने वाले कारक, प्रकार, उपयोग, कार्य, निर्माणी कम्पनियों की रेटिंग, रेटिंग की प्रक्रिया, रेटिंग के चिन्ह, क्रेडिट रेटिंग एजेन्सी के प्रवर्तक, रेटिंग्स की समीक्षा की प्रक्रिया